

XXI. ॥ ४६ [०णोर्युध्यम्] ॥ १ ॥ २८ ॥

XXII. ॥ ४७ ॥ १ ॥ ४८ [भृन्दनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मध्वन्तमानां त्वा प०]
॥ २ ॥ ४९ [कुकुदृढं दृपं - बृहन्सोमः सोमस्य पुरोगाः शुक्रः शुक्रस्य पु०]
॥ ३ ॥ ५० ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ॥ द्वाविंशत्यरनुवाकेषु द्वात्रिंशत् ॥ ॥

इति काण्वशाखायां संहितापाठेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ॥

I. ॥ ७. २७ a-d ॥ १ ॥ e-g ॥ २ ॥ २८ ॥ ३ ॥ २९ a ॥ ४ ॥ २९ b [प्रजया भू-
यास० सुवी०] ॥ ५ ॥

II. ॥ ७. ४१ - सूर्यम् ॥ १ ॥ ४२ - स्युषश्च ॥ २ ॥ ४३ - विधेम ॥ ३ ॥ ४४ - जर्ह-
पाणः ॥ ४ ॥ ४५ a. b ॥ ५ ॥ ४५ c. d. ४६ a [विदिय] ॥ ६ ॥ ४६ b [गृह -
विश] । ४७ a - त्वमश्यात् ॥ ७ ॥ ४७ a आयुर्दा० - ह्रीत्रे । b [त्वमश्या-
त्प्रा० मयो म०]. c [त्वमश्यात्त्व० मयो म०]. d [त्वमश्याद्वयो दा० मयो म०]
॥ ८ ॥ ४८ तव काम सुता भुनजामहै ॥ ९ ॥ १४ ॥

III. ॥ ८. १५ - यानाम् ॥ १ ॥ १६ ॥ २ ॥ १७ [सहराणो य०] - दधातु ॥ ३ ॥
१८ - वसूनि ॥ ४ ॥ १९ - ष्टतानु ॥ ५ ॥ २० - विद्वान् ॥ ६ ॥ २१ [गातु-
मिवा] ॥ ७ ॥ २२ ॥ ८ ॥ २२ ॥

IV. ॥ २३ ॥ १ ॥ २४ ॥ २ ॥ २५ ॥ ३ ॥ २६ - लोकः परि च वक्षि शं च व-
क्षि । २७ ॥ ४ ॥ २६ ॥

V. ॥ २८ ॥ १ ॥ २९ [यस्यास्ति - यस्या यो०] ॥ २ ॥ ३० ॥ ३ ॥ ३१ ॥ ४ ॥ ३२
॥ ५ ॥ ३१ ॥

VI. ॥ ४२ ॥ १ ॥ ४३ हव्ये काम्यऽश्ले रत्ने चन्द्रे - अघ्निये नामानि देवेषु
मा -] ॥ २ ॥ ५१ ॥ ३ ॥ ५२ अगन्म - ऽर्ज्यतिः ॥ ४ ॥ ५३ a ॥ ५ ॥ ५३ b
- प्रजया भूयास० सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः ॥ ६ ॥ ३७ ॥